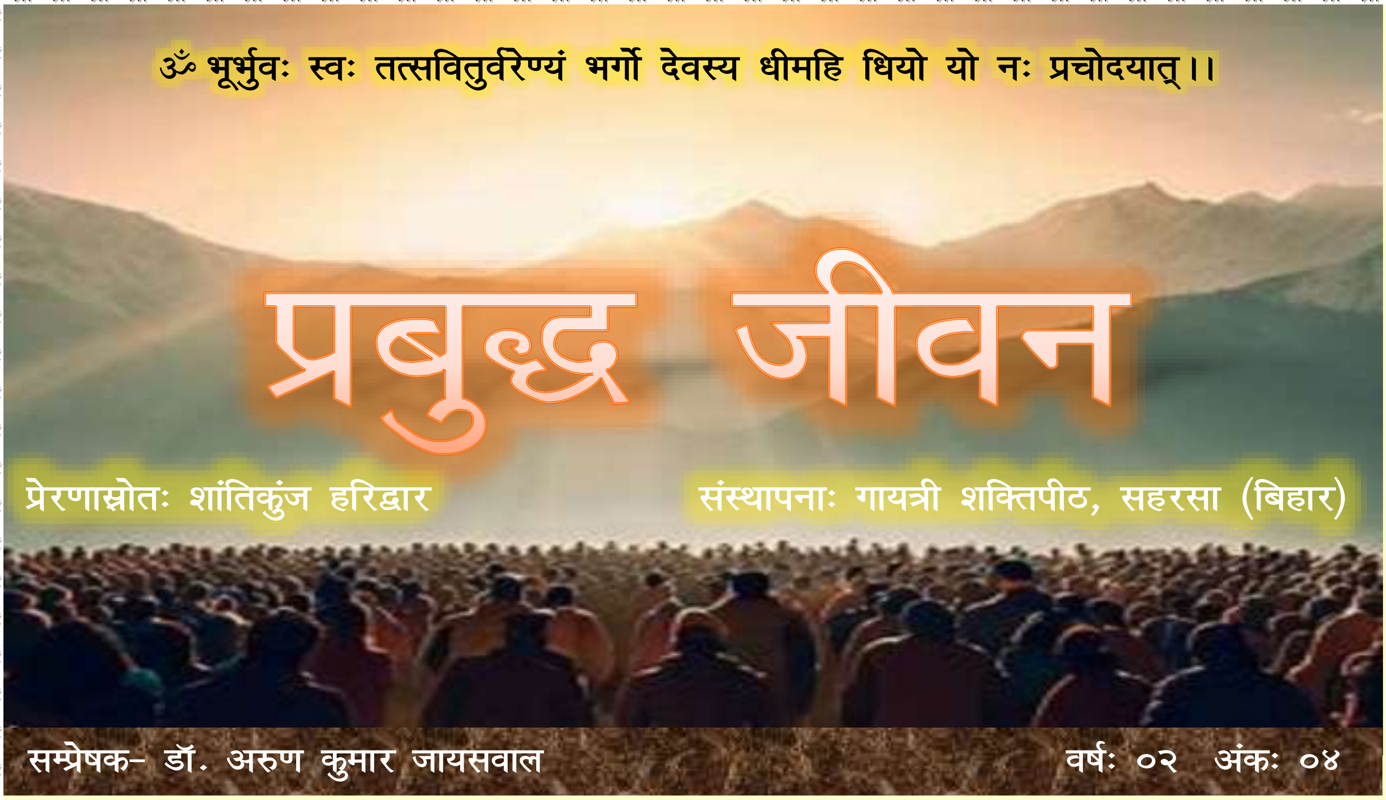

'सदुपयोग में है सच्ची सफलता'

प्राप्त करना उतना कठिन नहीं है जितना कि उपलब्धि का सदुपयोग करना। सम्पत्ति अनायास या परिस्थितिवश भी मिल सकती है पर उसका सदुपयोग करने के लिए अत्यन्त दूरदर्शी विवेकशीलता और सन्तुलित बुद्धि की आवश्यकता पड़ेगी। सुयोग्य व्यक्तियों की समीपता तथा सद्भावना प्राप्त कर लेना उतना कठिन नहीं है, जितना कि उस सान्निध्य का सदुपयोग करके समुचित लाभ उठा सकना।

मनुष्य में बीज रूप से समस्त संभावनाएँ विद्यमान हैं जो अब तक कहीं भी किसी भी व्यक्ति में देखी पाई गई हैं। प्रयत्न करने पर उन्हें जगाया और बढ़ाया जा सकता है। कोई भी लगनशील मनस्वी व्यक्ति अपने को इच्छित दिशा में सफलता प्राप्ति की आवश्यक क्षमताएँ उत्पन्न कर सकता है और उनका सदुपयोग करके मनचाही सफलता प्राप्त कर सकता है। जो नहीं है उसे पाने के लिए अधिकांश मनुष्य लालायित देखे जाते हैं। अप्राप्त को पाने के लिए व्याकुल रहने वालों की कमी नहीं, पर ऐसे कोई बिरले ही होते हैं जो आज की अपनी उपलब्धियों और क्षमताओं की गरिमा का मूल्यांकन कर सकें। जो मिला हुआ है वह इतना अधिक है कि उसका सही और संतुलित उपयोग कर के प्रगति के पथ पर बहुत दूर तक आगे बढ़ा जा सकता है। अधिक पाने के लिए प्रयत्न करना उचित है, पर इससे भी अधिक आवश्यक यह है कि जो उपलब्ध है उसका श्रेष्ठतम सदुपयोग करने के लिए योजनाबद्ध रूप से आगे बढ़ा जाय। जो ऐसा कर सके उन्हें जीवन में असफल रहने का दुर्भाग्य कभी भी सहन नहीं करना पड़ा है। यह एक शाश्वत चिरन्तन सत्य है।

हृदय से हृदय तक

वैसे तो यह माह अनेकों ऐतिहासिक और आध्यात्मिक घटनाओं को लिए समेटे हुए है लेकिन इस माह उस महापुरुष की पुण्य जयंती भी है जिनके जीवन को देखते हुए हृदय उनकी वंदना करता है- धीमतो वन्द्य चरिता मन्यन्ते पौरुषं महत्। अशक्ता पौरुषं कर्त्तुं क्लीवा दैवमुपासते।। अर्थात् महान व्यक्तियों ने सदैव व्यक्ति के उत्थान के लिए पुरुषार्थ को प्रधान माना है। भाग्य और देवों से उन्नति के मार्ग खोजने वाले नपुंसक पुरुषार्थविहीन व्यक्तियों की विद्वज्जन निन्दा करते हैं। नेहरू जी के बाद लाल बहादुर शास्त्री जी ने अपने मात्र १८ माह के प्रधानमन्त्रित्व काल में सभी को आश्चर्यचकित करते हुए वह यश व श्रेय प्राप्त कर लिया था, जो संसार का कोई भी नेता नहीं पा सकता। शास्त्री जी एक साधारण परिवार के थे। वे स्वयं बढ़े, विकसे और महान बने। आत्मावलम्बन की शक्ति ही उनके जीवन में दृढ़ता बनकर विकसित हुई।

शास्त्री जी का जन्म २ अक्टूबर, १६०४ में मुगलसराय में हुआ। इनके पिता श्री शारदा प्रसाद एक शिक्षक थे। अल्पायु में ही पिता का देहावसान हो गया। बचपन से ही इनकी अग्नि परीक्षा आरंभ हो चुकी थी। विद्यालय जाने के लिए गंगा पार करना पड़ता था लेकिन उनके पास नाव वाले को किराया देने के पैसे भी नहीं होते थे। पितृविहीन बालक ने पुण्यसलिला माँ गंगा का ही सहारा पकड़ लिया और वे अपने किताबों को अपने सिर पर बांधकर रोज गंगा पार करते और वापस आते थे। गंगा ने उन्हें तैरना सिखाया, जीवन के उतार-चढ़ावों में साहसी बने रहने का पाठ पढ़ाया और अपनी ही तरह निर्मल, निष्कलुष बने रहने की सामर्थ्य प्रदान की।

शास्त्री जी ने कभी भी परावलंबन को नहीं अपनाया। पारिवारिक स्थिति साधारण रहते हुए भी उन्होंने अपना लक्ष्य साधारण नहीं रखा। ऐसी परिस्थितियों में कोई अन्य साधारण साहस वाला आदमी होता तो शिक्षा पूरी करके कहीं नौकरी खोज लेता लेकिन शास्त्री जी ने एक सच्चे देशभक्त की भूमिका निभाने में इस स्थिति को कभी बाधा के रूप में नहीं माना। देशहित में असहयोग आंदोलन में भाग लेने से लेकर, साधारण कार्यकर्ता से होते हुए भारत के प्रधानमंत्री जैसे पद पर पहुँच पाना- यह वास्तव में उनके मानवीय सद्गुणों और कर्मठता का ही प्रतिफल था। यही गुरुमंत्र उन्होंने अपनी संतान को भी दिया। एक बार उनसे किसी मित्र ने प्रश्न किया- आप अपने बच्चों को थोड़ा सहारा देते तो वे भी आज अच्छे स्थानों पर होते? शास्त्री जी हंसकर बोले- अवश्य होते पर उनमें योग्यता न होती। जो स्वावलंबन और आत्मविश्वास के साथ बढ़ता है, उसकी योग्यता, दृढ़ता, कर्मठता, साहस और कर्तव्य भावना अदम्य होती है।

शास्त्री जी की सफलतायें वास्तव में भारतीय आदर्शों की सफलता है। उन्होंने सिद्ध कर दिखाया यदि आलीशान इमारतें, कुलीनतायें, सम्पन्नतायें, उपाधियाँ अथवा प्रचण्ड व्यक्तित्व किसी को सफल बना सकते हैं तो सच्ची सरलता, सादगी, साधुता और सामान्यता भी किसी को सफल बना सकने में सर्वथा समर्थ है। शास्त्री जी की सफलता एवं उन्नति का उदाहरण निःसन्देह उन हजारों लाखों व्यक्तियों के लिये एक प्रेरक प्रसाद है जो जीवन में उन्नति करना चाहते हैं किन्तु अपनी साधनहीन एवं कठिन परिस्थितियों को देखकर हिम्मत हार कर यथास्थान बैठे रहते हैं।

हर मनुष्य को परमात्मा ने शक्तियाँ, सामर्थ्य, योग्यता, प्रतिभा दी है परंतु मनुष्य अपने प्रयत्नों के अनुरूप ही परिणाम उपलब्ध करता है। यह सृष्टि का अकाट्य नियम है। इस आध्यात्मिक नियम के साकार प्रतिरूप शास्त्री जी के जीवन से हम सभी को सफलता के सही राजमार्ग का बोध प्राप्त हो, यही आद्यशक्ति जगन्माता गायत्री से प्रार्थना है। आप सभी को नवरात्रि साधना एवं विजयादशमी त्यौहार की बहुत-बहुत शुभकामनाऐं।

अरुण कुमार जायसवाल

DARKNESS

Darkness is not a separate entity. The mere absence of light is darkness. Darkness dwells in the earth's core. Darkness is where life locates inside a mother's womb. Darkness promises light because the break of a dawn is the promise of a new day after a long night of complete blackness. It is only then we appreciate the first rays of the Sun and understand that life emerges only from the depths of non- illuminated spaces. Darkness is beautiful because it is only in the context of that black sky that we see the universe and the infinite stars and constellations.

A butterfly comes into being after struggling and fighting and breaking open out of its cocoons and then making sense out of that struggle. All life on this earth has to first endure a long phase of darkness before it summons to birthing. Life too is something of a play of darkness and light. It takes dark clouds to know the meaning and significance of spring. Darkness is a truth as much as light is. Failure is an integral part of life as much as success is.

The nine days of Durga Pooja which is known as 'Navratri' or nine nights is the resurgence of the Goddess in all her manifestations. She begins as a young girl and then evolves into a beautiful maiden and then finally takes the form of the destroyer of evil. Here, the darkness is symbolic as it becomes the bridge between the earth and the divinity around. The universe is represented through a mud pot which again signifies the womb of the mother earth and finally on the tenth day- it is the triumph of righteousness over the wicked and cruel.

To respect darkness is to possess an immense understanding of what life constitutes. Let us understand once again this Durga Pooja festival that it is the feminine energy that is all pervading and omnipresent. It was always there and always will be. Women are still attacked, humiliated inside their homes, brutally murdered and their sense of existence is still ripped apart. This darkness has to be combated and despite being an educated society, the crimes perpetuated on women are still on a dangerous high. This darkness in the society and in the minds of people needs to be addressed and it is not enough to just light a million lamps. That lamp has to be first lit inside one's own being.

- **Dr. Avhinav Shetty Jaiswal**

दुर्गातत्व

प्रश्न उठता है कि यह दुर्गातत्त्व है क्या ? जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है दुर्गा, यानि दुर्ग से संबंधित वह शक्ति जो दुर्ग बना भी सकती है और मिटा भी सकती है, जो दुर्ग का पालन भी करती है और जो दुर्ग की रक्षा भी करती है, जो इस दुर्ग की व्यवस्थापिका शक्ति है जो इस दुर्ग में वास भी करती है । अगर हमें इस दुर्ग का परिचय पाना है तो इस दुर्गातत्त्व को समझना होगा । देवीपुराण में वर्णित है कि दुर्गा पराप्रकृति हैं, शिव की पटरानी हैं, देवताओं के सम्मिलित तेज से उत्पन्न हैं, महामाया हैं, महिषासुरमर्दिनी हैं । इनके हजारों नाम हैं ।

अब प्रश्न उठता है कि यह दुर्ग है क्या ? कहाँ है यह दुर्ग ? तो यह दुर्ग दो प्रकार का है - एक बाहरी और एक आंतरिक । बाहरी तौर पर अगर आकलन किया जाए तो यह दुर्ग संसार है, सृष्टि है और आंतरिक तौर पर देखा जाए तो वह दुर्ग अपने ही मन की सृष्टि है, यानि मानव मन के शुभ - अशुभ विचारों से की गई कल्पना से बना एक ऐसा किला है जिसमें जीव वास करता है । पर यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि बाहर के दुर्ग की भी निर्मात्री, पालिनी और संहारिनी शक्ति माँ दुर्गा हैं और अन्तर के भी दुर्ग की निर्मात्री, पालिनी और संहारिनी शक्ति माँ दुर्गा ही हैं । उपनिषदों में माँ दुर्गा को ही गुह्यकाली की संज्ञा दी गई है ।

दुर्गा सप्तशती में दुर्गा स्वयं ही कहती हैं - "अहं प्रकृति पुरुषात्मकं जगत्" । अर्थात् मैं ही प्रकृति और पुरुष रूप जगत् हूँ । तो दुर्गा ही प्रकृति हैं, दुर्गा ही पुरुष हैं । वास्तव में, हम सभी का मन अपने - अपने हिसाब से, अपने - अपने संस्कारों और अपनी -अपनी चित्तवृत्तियों के अनुसार एक - एक दुर्ग बनाता है । कोई अज्ञानता से प्रेरित होकर दुर्ग बनाता है तो कोई ज्ञान की अभिलाषा से भी दुर्ग बनाता है पर हर मन अपने - अपने दुर्ग को बनाता है और वह उसी दुर्ग में रहना पसन्द करता है । कोई शक्ति उसे उस दुर्ग से हिला भी नहीं सकती जबतक उसकी इच्छा नहीं हो जैसे – रावण का मनःदुर्ग राम नहीं हिला सके और राम का रावण नहीं हिला सका । किसी का यह मनःदुर्ग ईर्ष्या - विद्वेष, घृणा - नफरत आदि से बनाया गया हो, चाहे किसी का यह दुर्ग प्रेम, सेवा, त्याग और परोपकार आदि से बनाया गया हो पर दुर्ग का निर्माण तो होता है और इस दुर्ग के निर्माण में जो मायाविनी शक्ति काम कर रही होती है वे ही हैं दुर्गा ।

हमारे जीवन में भ्रमरूप विपक्ष और ब्रह्मरूप पक्ष को दुर्गा ही अपनी परम कृपा से समझा सकती हैं क्योंकि हम सभी अपने भ्रमरूप मनःदुर्ग में बैठे हुए हैं और दुर्ग के निर्माण, पालन, संहार के रहस्यों की परा शिक्षिका माँ दुर्गा ही हैं । तो हम अगर उनसे शिक्षा लें तो हम अपने मन रूप दुर्ग के रहस्य को समझकर अपने इस दुर्ग की सुरक्षा कर सकते हैं और अपनी-अपनी भ्रांतियों को दूर कर सकते हैं । दुर्गा सप्तशती में ऋषियों ने दुर्गाशक्ति को नमन करते हुए कहा है -

या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।

मानव मन के अन्दर छुपे हर दुर्गुण असुर ही तो हैं और मन के अन्दर छुपे हर सद्गुण देव ही तो हैं तो देवासुर संग्राम में अगर हमें विजय चाहिए तो हमें दुर्गा की शरणागति चाहिए क्योंकि असुर मायावी हैं और मायावी की खबर माया ही ले सकती है । वह माया दुर्गा ही है जो अपने भक्तों की इन असुरों से रक्षा करती हैं । ये असुर हमारे मन में अविवेकरूप रात्रि का गहन अन्धकार भर देते हैं और दुर्गा उस रात्रि को दूर करने में विवेकरूप नवोदित सूर्य की भूमिका में होती हैं । अब हम रात को समझेंगे तभी तो दिन को पूरी तरह से समझ पाएंगे । हर चीज का पक्ष और विपक्ष तो होता ही है । तो हमारे जीवन में भ्रमरूप विपक्ष और ब्रह्मरूप पक्ष को दुर्गा ही अपनी परम कृपा से समझा सकती है । इसलिए हम सभी को माँ दुर्गा के शरणागत होकर अपने मानव जीवन को धन्य करने की कोशिश करनी चाहिए ।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- **कठिन परिस्थितियां व लोग हर किसी के जीवन का हिस्सा हैं।**
- **डिफिकल्ट प्रवृत्ति के लोग वे होते हैं जो अपने जीवन में नाखुश और बोर होते हैं।**
- **आप जैसा सोचते हैं और महसूस करते हैं आपके जीवन की छवि वैसी ही बन जाती है।**
- **नकारात्मक सोच रखने वाले लोग दूसरों तक केवल नकारात्मक सोच ही पहुंचा सकते हैं, इसलिए उनसे दूर रहना ही बेहतर होता है।**
- **ऐसे लोगों के बीच रहें जो आशावादी हैं, शांत रहते हैं और दूसरों को प्रोत्साहित करते हैं।**
- **अगर आप विपरीत परिस्थितियों का आकलन करते हैं तो आप उससे जुड़े डर से बाहर आ सकते हैं।**
- **नकारात्मक स्थितियां हमें कुछ सीखने का अवसर देती है । वे यह सिखाती हैं कि जब दोबारा ऐसी स्थिति उत्पन्न हो तो उससे कैसे निपटा जाए।**
- **किसी बात को सीने से लगाए रहकर हमेशा कुढ़ते रहने से अच्छा है कि उस व्यक्ति को माफ कर दिया जाए जिसने आपको आहत किया है।**
- **माफ करने से समस्याएं तो सुलझती ही हैं, साथ ही एक नए सिरे से जिन्दगी की शुरुआत भी की जा सकती है।**
- **अगर आपको कोई परेशान कर रहा हो तो उसका असर जिंदगी व अपनी खुशियों पर न पड़ने दें। इससे आपका कैरियर व निजी जिंदगी, दोनों पर बुरा असर पड़ सकता है।**
- **संगीत शारीरिक व मानसिक विकारों को दूर कर उसे स्वस्थ संजीवनी का रूप प्रदान करता है।**
- **दोस्ती बनाए रखने की सारी कोशिशें आप अकेले ही कर रहे हैं, तो अलर्ट होने की जरूरत है। यह स्पष्ट संकेत है कि क्या आप टॉक्सिक फ्रेंडशिप में हैं ? यह दोस्ती नुकसानदेह है । यह रिश्ता मानसिक सेहत को नुकसान पहुंचता है, बोझिल करता है।**
- **टॉक्सिक दोस्ती एक तरफा होती है । आप दोस्त की चिंताएं सुन रहे हैं, उन्हें सलाह दे रहे हैं, पर बदले में आपको उसी तरह का व्यवहार नहीं मिल रहा है। उसके साथ वक्त बिताने के बाद आप भावनात्मक रूप से थक जाते हैं या पहले से भी बदतर महसूस करते हैं।**
- **अगर दोस्ती खुशी नहीं दे पा रही है, तो सम्मानजनक तरीके से अलग हो जाना बेहतर है। इससे जिंदगी में सुकून आ जाएगा।**
- **जब भावना में गहराई बढ़ती है तो प्यार बढ़ता है और भावना में व्यापकता बढ़ती है, विस्तार बढ़ता है, तो दोस्ती बढ़ती जाती है।**
- **प्यार देह से आत्मा तक की यात्रा है, पर दोस्ती आत्मा तक की यात्रा नहीं है।**
- **जीवन चलता कैसे है? जीवन चलता है पुण्य, तप और ज्ञान से। पुण्य आपको सुख-सौभाग्य देता है और आपके जीवन को संसार में प्रकाशित करता है । तप आंतरिक संपदा है, बाहरी संपदा नहीं है । तपआपको ऊर्जावान बनाता है । तप का मतलब सिर्फ व्रत-उपवास नहीं है, तप ज्यादा मानसिक होता है। फिर तो आप अनेक लोगों के जीवन में भी सौभाग्य की सृष्टि कर सकते हैं। संसार और सांसारिकता के लिए, जीवन में सफलता और उन्नति-प्रगति के लिए पुण्य और तप का होना आवश्यक है। पुण्य और तप आपके जीवन का ईंधन है। हां! तपस्या का ईंधन आपको बहुत ऊंची उड़ान प्रदान करेगा। जहां तक ज्ञान की बात है ऐसा व्यक्ति आत्मबोध संपन्न है, आत्मा में अवस्थित है वह किसी ईंधन के बल पर नहीं चलता ,वह एक तरह से सेटेलाइट है, कक्षा पार कर गया है। ज्ञान स्वऊर्जा से संचालित है, उसका पतन संभव नहीं है, उसको आप गिरा नहीं सकते ।**

- आत्मज्ञान संपन्न व्यक्ति, आत्म उपलब्ध संपन्न व्यक्ति को प्रकृति जो कुछ भी आवश्यक है वह सब प्रदान करती है। उसकी सारी व्यवस्था प्रकृति करती है । उसका न कोई संकल्प है, न कोई विकल्प है, न कल्पना है, न विचार है। एक तरह से वह भगवान का राजकुमार है।

- ज्ञानी यानि आत्मविभूति संपन्न व्यक्ति, भक्ति में लीन व्यक्ति प्रकृति के संसार से अपना तादात्म्य विसर्जन कर चुका है । आप इस अवस्था में हैं कि प्रकृति का कोई भी रहस्य और कोई भी वैभव आपको बाँध नहीं सकेगा।

- जो हमको धरती पर आंखों से दिखाई देता है, चलती-फिरती चीज, दौड़ता हुआ कुत्ता, यह न्यूटानियन मैकेनिक्स है । कल्पना करें, हम पदार्थ की जगह एनर्जी को मैकेनाइज्ड करने लगे तो सिद्धांत क्या होगा? हम बात कर रहे हैं क्वांटम कंप्यूटिंग की। क्वांटम क्या है? फिजिक्स ऑफ एनर्जी, वह मैटर फिजिक्स नहीं है।

- इतनी विद्या और विज्ञान लेकर के क्या मनुष्य धरती पर जीवन जीना सीख पाया? इतना क्वांटम है, इतना ज्ञान यानि कला विद्या और विज्ञान है। प्रश्न यह है कि यह जीवन का सहयोगी है या जीवन का विरोधी है ?आज हम जीवन को ही खा गए हैं।

- क्या हम जीवन और जीवन मूल्यों का सम्मान करते हैं? हम इस बात पर खुश हो जाते हैं कि हमारे पास एनर्जी के इतने साधन हैं या हमारे पास इतना ज्ञान है। परंतु इस बात पर नहीं सोचते कि उसका उपयोग करने का हमारे पास सही-तौर तरीका है या नहीं, वह विवेक है या नहीं।

- दुनिया के कला-विद्या-विज्ञान के साथ जीवन के कला- विद्या-विज्ञान भी विकसित होने चाहिए।

- मनुष्य जीवन का मूल सिद्धांत क्या है? भगवान ने हर व्यक्ति को मौलिक रूप से स्वतंत्र बनाया है। हमें सहजीवन प्रणाली जीने का मंत्र विकसित करना चाहिए।

- प्रकृति के साथ जीवन जीना सीख लें, तो प्रकृति हमारे ऊपर सकारात्मक ऊर्जा उड़ेलेगी ।

- हर एक आदमी के पास सार्थकता की परिभाषा अलग-अलग होती है जीवन की। सामान्य जनों के लिए सार्थकता का अर्थ सुखानुभूति, खाया-पिया-सोया मस्त है ।थोड़े जो विचारशील हैं उनके लिए सार्थकता का अर्थ है उद्देश्य पूर्ति। जो बहुत विवेकवान हैं उनके लिए सार्थकता का अर्थ है जीवन की सार्थकता, जो जीवन आप जी रहे हैं उसमें संतोष का अनुभव हो,कुछ आपने अच्छा किया, कुछ आपसे बेहतर हुआ। जो बहुत ज्ञानी हैं विवेक और वैराग्य संपन्न हैं, उनके लिए जीवात्मा का परम कल्याण यानि ईश्वर तत्व की अनुभूति एवं "अयम् आत्मा ब्रह्म' की अनुभूति जीवन की सार्थकता है। तो सुखानुभूति से लेकर अयम् आत्मा ब्रह्म तक के लक्ष्य को भी जीवन की सार्थकता कहा जाता है।

- सार्थकता निर्भर करती है जीवन चेतना, मनुष्य चेतना के विकास के तल पर।

- मनुष्य के सारे कष्ट का कारण अज्ञान है, भ्रांति है। भ्रांति को ही माया कहते हैं। माया से उबरने का एकमात्र उपाय है ज्ञान।

- श्री अरविंद ने भी लिखा है डिवाइन लाईफ में- जीवात्मा जिस संकल्प के साथ जन्म लेती है वही संकल्प प्रकृति निभाती है ।

- सामान्य जीवन केवल मनःसंकल्प का परिणाम है, इसमें कोई तत्व नहीं है। परंतु जो आत्मा का संकल्प होता है वह कटता ही नहीं है। आत्मा का संकल्प दृढ़ होता है।

- जैसे-जैसे जीवन चेतना का विकास होता है, वैसे-वैसे जीवन का प्रयोजन बदल जाता है।

जिज्ञासा

प्रश्न:--क्या ज्योतिष विद्या को मानना, आत्महत्या करने के समान है?

उत्तर- तंत्र, ज्योतिष, आयुर्वेद और योग प्राच्य विद्या हैं। तंत्र पदार्थ ऊर्जा का अध्ययन है, इसमें पदार्थ विज्ञान के विभाग भी आते हैं। ज्योतिष खगोलीय ऊर्जा का अध्ययन है। आयुर्वेद वनस्पति ऊर्जा का अध्ययन है। योग शरीर में प्राण ऊर्जा का अध्ययन है। चारों एनर्जी फील्ड को ही डील करता है। वेदों के छह अंग, वेदांग कहे गए हैं। शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छंद और ज्योतिष है। इसमें ज्योतिष सबसे ऊपर है। अगर आप ज्योतिष से इनकार करते हैं तो आप वेदों से इनकार करते हैं। वेदो में स्थान- स्थान पर ज्योतिष का चिंतन है। अगर आप वेद को नहीं मानते तो ना मानें, फिर आप धर्म को भी नहीं मानते, अध्यात्म को भी नहीं मानते, फिर आप कुछ नहीं मानते। एक महर्षि आरिष्टनेमि हुए हैं, उन्होंने ज्योतिर्निबंध में एक बात लिखी है- वेदों तथा अन्य विद्याओं में काल विशेष पर आधारित जो धर्म-कर्म निर्दिष्ट है, वो ज्योतिष विद्या के आधार पर सिद्ध होते हैं। इस ज्योतिषशास्त्र की संसार में जय हो, यानी ज्योतिष वेद का नेत्र है, चक्षु है। सिद्धांत शिरोमणि ग्रंथ में भी ज्योतिषशास्त्र को वेदों का नेत्र कहा गया है। इसी कारण वेदांगों में ये सबसे महत्वपूर्ण है। शरीर के सभी अंग, कान, नाक आदि सही होने पर भी नेत्र रूपी अंग सही नहीं होने पर मनुष्य कुछ भी करने में समर्थ नहीं होता। ज्योतिषशास्त्र में पंचांग होता है, काल की गणना होती है, तिथि, वार, नक्षत्र ,करण, योग होते हैं। फिर आप प्रथमा तिथि, द्वितीया तिथि इत्यादि न मानें, सोमवार, मंगलवार, बुधवार न मानें, अभी 2024 ईस्वी चल रहा है न मानें, सम्वतसर न मानें। कोई भी पूजा-पाठ मे संकल्प लेते हैं तो तिथि, वार, पक्ष, संवत फिर क्यों बोलते हैं? सोमवार नाम क्यों पड़ा? चंद्रमा का दिन होने से। रविवार नाम क्यों पड़ा? सूर्य का दिन होने से। ये 7 दिन जो हैं ये ग्रहों के नाम पर हैं। वेद का नेत्र है ज्योतिष, प्रकाश है ज्योतिष। आप ज्योतिषशास्त्र को न मानें,फिर वराह मिहिर को न मानें, भृगु ऋषि को न मानें, वाग्भट्ट को ना मानें, वाणभट्ट को न मानें, आर्यभट्ट को न मानें, नारद ऋषि को न मानें, पाराशर को न मानें, लोमस को ना मानें, ब्रह्मगुप्त को न मानें, श्रीधराचार्य को न माने, मुंजाल को न मानें, राजा भोज को न माने, शतानंद को न मानें, श्रीपद को न मानें, भास्कराचार्य को न मानें। ये वेद ऋषियों के सिद्धांतों से बने हैं। जहाँ-जहाँ काल की गणना हुई है, हर जगह ज्योतिष जुड़ी हुई है। भारत से ज्योतिष गई अरब में, भारत से ज्योतिष गई यूनान में, जहाँ-जहाँ गणित गया, वहाँ-वहाँ ज्योतिष गई। क्या आपकी आंखें बंद कर लेने से सूर्य चंद्रमा लुप्त हो जाएंगे?

दरअसल ज्योतिष में रुचि उनकी भी होती है, जो त्यागी होते हैं। वराहमिहिर लिखते हैं-जिन्होंने अनासक्ति का, यानि त्याग का आश्रय लिया है, जो अहंता, ममता, आसक्ति से रहित हैं, वे भी ग्रह नक्षत्र को जानने वाले, ज्योतिर्वेत्ता से अपने भविष्य का प्रश्न पूछते हैं। यानि जो त्यागी होते हैं, आध्यात्मिक होते हैं, वो भी अपने लिए सवाल पूछते हैं। ज्योतिषी गलत हो सकता है, ज्योतिषशास्त्र गलत नहीं होता। डॉक्टर गलत हो सकता है, पर मेडिकल साइंस गलत नहीं होता। ऑफिसर गलत हो सकता है, पर प्रशासन कार्य गलत नहीं हो सकता। इंजीनियर गलत हो सकता है, पर इंजीनियरिंग साइंस गलत नहीं हो सकता है।

क्या मनुष्य का जीवन केवल यह शरीर है, फिर तो अगले-पिछले जीवन का कोई मतलब ही नहीं है। अगर आप पुनर्जन्म के सिद्धांत को मानते हैं तो पूर्वजन्म के कृत्यों, कर्मो को जानने का ज्योतिष के अलावा और कोई साधन है क्या? क्योंकि ज्योतिष विज्ञान सच कहें तो कर्म का विज्ञान है, किस तरह का कर्म करें, कब करें, ताकि अगला-पिछला जीवन और वर्तमान जीवन व्यवस्थित रहे। आप अंबानी के यहाँ क्यों नहीं पैदा लिए, टाटा बिरला के यहाँ क्यों नहीं पैदा लिए, गरीब के घर में क्यों नहीं पैदा लिए? अमेरिका-इंग्लैंड में क्यों पैदा नहीं लिए, भारत में ही क्यों पैदा लिए? ये कौन निर्धारित करता है? कर्म का जो स्तर होता है, जीवात्मा उसी स्तर के गर्भ में जन्म लेती है, कर्मप्रधान यह सृष्टि है।

वेदांग ज्योतिष को तीन भागों में विभाजित किया गया, ऋग ज्योतिष, यजु: ज्योतिष और अथर्व ज्योतिष। कोई ऐसा पुराण नहीं है जिसमें ज्योतिष का उल्लेख नहीं किया गया हो। भगवत गीता में भी ज्योतिष शास्त्र की चर्चा है-कालो कलयतामहम्, ज्योतिषां रविरान्शुमान, प्रकाशित करने वालों में मैं सूर्य हूँ।। तो सारे आर्षग्रंथों में ज्योतिषशास्त्र की चर्चा

है। क्या सारे वेद साहित्य, आर्ष साहित्य को आप इनकार करना चाहते हैं? आप ऐसा कर सकते, लेकिन आपको ये भी घोषणा करनी होगी कि आप आत्मा के अस्तित्व को नहीं मानते, आप नास्तिक हैं।

जो ज्योतिषी ज्योतिष विद्या के नाम पर ठगता है, उसकी निंदा होनी चाहिए। हालांकि ठगी तो हर दिशा में है, कलर्क भी ठगता है, ऑफिसर भी ठगता है, डॉक्टर भी ठगता है, धर्म के नाम पर बाबा लोग ठगते हैं, काउंसलिंग के नाम पर मोटिवेशनल स्पीकर लोग भी ठगते हैं, इंजीनियर भी ठगते हैं, व्यवसायी भी ठगते हैं, मसाले में घोड़े की लीद मिला देते हैं, धनिया या हल्दी के गुण खराब नहीं होते हैं, मिलावट के कारण खराब होते हैं । तो ज्योतिष के विज्ञान होने में संदेह नहीं है, ज्योतिषी के गड़बड़ होने के अनेकों प्रमाण है। और ज्योतिष अंध विश्वास नहीं है। ज्योतिष की अपनी गणना है वह गणित पर आधारित है। उसका फलित भी गणित पर आधारित है। ज्योतिष कर्मफल की व्याख्या करता है, अंधविश्वास की व्याख्या नहीं करता। ज्योतिष के आधार पर हम अपने कर्मों को सुधार सकते हैं, कर्मो की दिशा बदल सकते हैं, आने वाले समय का निरूपण, निर्धारण करके, हम अपने जीवन की शैली को बदल सकते हैं।

सूर्य के कृपापात्र वाराह मिहिर ज्योतिष के पहले आचार्य है, जिन्होंने ज्योतिषशास्त्र के सिद्धांत की और होरा की व्याख्या की। काल की गणना करने वाले संवत्सर के रूप में पहले आचार्य वराहमिहिर हैं। जिस प्रकार दर्पण से और निर्मल जल से छाया चली जाती है पर जाते समय दिखाई नहीं देती है, जिस प्रकार सूर्य की किरणें सूर्यमणि में प्रतिष्ठित होती हैं, पर प्रतिष्ठित होती दिखाई नहीं देती, जिस प्रकार देह में आत्मा प्रविष्ट होती दिखाई नहीं देती, या निकलती हुई भी दिखाई नहीं देती, उसी प्रकार ग्रह मनुष्य के शरीर में प्रविष्ट होते हुए दिखाई नहीं देते, लेकिन उनका प्रभाव पड़ता है। अगर आप मनुष्य जीवन को विधिवत्, गणितीय और वैज्ञानिक आधार पर जानना चाहते हैं, केवल शरीर नहीं, शरीर के साथ कर्म और कर्मफल जुड़ा हुआ है, शरीर के साथ अंतरिक्षीय ऊर्जा और चेतना भी जुड़ी हुई है, तो इसके लिए जो एकमात्र विज्ञान है वह है ज्योतिर्विज्ञान।

हाँ ये हम कह सकते हैं, जिस तरह मेडिकल फील्ड में करप्शन फैला, इंजीनियरिंग फील्ड में करप्शन फैला, आयुर्वेद में करप्शन फैला, आप अब उतनी शुद्ध दवाएं नहीं पाते है, मेडिकल एथिक्स का नाश हो रहा है, कोई डॉक्टर किडनी निकाल लेता है, अंग बेच देता है, बहुत सारे हॉस्पिटल में डॉक्टर पेशेंट को ठगते है, इसमें मेडिकल साइंस दोषी नहीं होता है। उस व्यवसाय में लगे हुए लोग दोषी होते हैं। उसी तरह ज्योतिष विद्या में गलत करने वाले लोग दोषी होते हैं, ना कि ज्योतिष विद्या। वैसे तो लोग आजकल राम को भी गाली देते है, कृष्ण को भी गाली देते है, जिसकी समझ जितनी है, सोचने का जिसका जितना तल है, उस हिसाब से गाली देने का स्तर तय होता है। वैसे कुत्तों से अंत्याक्षरी नहीं खेलनी चाहिए। जैसा कि हमने कहा ज्योतिष का अर्थ होता है प्रकाश, प्रकाश हो तो आपको दिखता है, प्रकाश ना हो तो आपको नहीं दिखता, ज्योतिष ज्ञान चक्षु है, अगर नहीं है तो हम अंधे हैं।

प्रश्न:-- अभी जो एक रेप का केस हुआ कोलकाता में लेडी डॉक्टर वाला, इस घटना में लड़की की क्या गलती थी? क्या वह छोटे अश्लील कपड़ों में थी, क्या जानबूझकर अकेले घूम रही थी? क्या गलती थी?

उत्तर-ये अपसंस्कृति है, ये भारत पर छाया हुआ सांस्कृतिक संकट है। प्रश्न ये नहीं है कि लड़की क्या कर रही थी, आज के इंसान के अंदर जानवर समा गया है। पश्चिमी दार्शनिक बर्ट्रेंड रसेल ने लिखा है- ये मनुष्य के अंदर एक बर्बर पशु है जो दबा हुआ है, यदि हमारा खानपान, हमारा रहन-सहन, हमारा व्यवहार गड़बड़ाता है तो बर्बर पशु हुंकार मारकर बाहर आ जाता है और झपट्टा मारता है। तो मनुष्य के अंदर जो बर्बर पशु है जिसे पिशाच कहते हैं। जिसने भी यह कृत्य किया है, वो नर कीटक नहीं है, नरपिशाच है । वो कुछ भी कर सकते हैं और उनको वही दंड मिलना चाहिए जो पिशाचों को मिलता है। प्रश्न ये नहीं कि लड़की ने क्या पहन रखा था, प्रश्न यह है कि समाधान क्या है? समस्या का समाधान करना है तो वापस हमें भारतीयता की ओर लौटना होगा। आवेग में, आवेश में, उन्माद में, हम अपनी जड़ों को, अपनी संस्कृति को, अपनी पुरखों की दी हुई सीख को भूला बैठे हैं। आज जीवन मूल्य पिछड़ेपन की निशानी है, फिर आप अव्यवहारिक हैं। जब आप शराब की बोतल खोलते हैं तो उसमें बैठा हुआ पिशाच आपको नजर नहीं आता? जो आपके भीतर के मनुष्य को समाप्त कर देगा। भारत जैसे उष्ण प्रधान देश में शराब साक्षात् जहर है, पता नहीं लोगों को कब समझ में आएगा? कुछ इलाके में जहाँ ज्यादा ठंड पड़ती है, वहाँ परंपरागत पेय है, स्थानीय जड़ी बूटी की, जो गर्मी प्रदान करते हैं। जैसे कश्मीर में कहवा पीते हैं। शराब की तो कहीं भी जरूरत ही नहीं है। बहुत

जगह फलों के रस होते हैं जो फर्मेंटेड रूप में होते हैं, उसमें नशा नहीं होता है, जो स्वास्थवर्धक होता है। समस्या यह है कि भारतवासी भारतीयता को भूल गए। तो जीवन मूल्य का संकट खड़ा हो गया है। गलती है सोच की, गलती है सभ्यता की। ये जाति-धर्म-मजहब का प्रश्न नहीं है, ये कल्चर का प्रश्न है, संस्कृति का प्रश्न है।

ये सिर्फ व्यक्ति निर्माण का प्रश्न नहीं है, ये परिवार निर्माण से जुड़ी हुई है। परिवार में लड़कों को सिखाया जाए कि लड़कियों से, महिलाओं से, कैसा व्यवहार करना चाहिए, तो बाहर परेशानी खड़ी ही नहीं होगी। महाभारत में भीष्म पितामह युधिष्ठिर को बताते हैं, जिसे मैं बार-बार जिक्र करता हूँ कि हे राजन ! अच्छे राज्य की पहचान यह है कि मध्यरात्रि में आभूषणों से सुसज्जित महिलाएं, निर्भयता और स्वच्छंदता पूर्वक विचरण कर सकें, तो समझो वही राजा और राज्य अच्छा है। महिलाओं की रात में नाइट ड्यूटी है तो निकलेंगी। ये समस्या सिर्फ बंगाल की नहीं है, पूरे मानव समुदाय की है। आज सच में उन्मादी पशु, बर्बर पशु, हिंसक पशु मनुष्य में से निकलकर आ गया है।

प्रश्नः-- आजकल रेप की संख्या बढ़ती जा रही है। हमारी बहनें अपने सम्मान एवं रक्षा के लिए शस्त्र क्यों नहीं उठाती है? रेप करने वालों को मारने के बदले उसे कानून को सौंपना उचित है?

उत्तर-मार डालिए, कौन मना करता है। दूसरा आदमी रेप करेगा, तीसरा-चौथा-पांचवां करेगा। समस्या वही है, महाभारत में जो व्यास ने कहा- मनुर्भव, मनुष्य हो जाओ, मनुष्य बनो। अच्छा ये सोचिये, ऋषि व्यास ने ऐसा क्यों कहा होगा- मनुष्य बनो? क्योंकि उनको लग रहा होगा कि अभी मनुष्य होने में कुछ कमी है। दो पांव पर चलने वाला यह जानवर है, अभी ठीक से इंसान नहीं बना है। इसलिए मनुष्य होने में जो तुम्हारी खोट है, उसे दूर करो। पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने भी कहा-मनुष्य का जन्म तो सहज होता है, मनुष्यता बहुत कठिनाई से प्राप्त होती है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जो सिमरिया बेगूसराय, बिहार के ही रहने वाले हैं, उन्होंने लिखा-पूंछ झड़ी, नख दंत झड़े, पशुतम झरना बाकी है। हम चिम्पान्ज़ी, गोरिल्ला, बंदर से इंसान बन गए, नाखून जरूर झड़ गया, पूंछ जरूर झड़ गया पर पशुत्व का जाना अभी बचा हुआ है। सम्मान और सुरक्षा के लिए शस्त्र जरूर उठाइए, फिर आप मनुष्यता की सारी संभावना को अगर समाप्त कर देना चाहते हैं, तो करना उचित है। फिर धरती पर मनुष्य के रूप में पशु ही विचरण करते दिखेंगे। मनुष्य फिर से कबीलों के युग में लौट जाएगा।

प्रश्नः- मेरा यह प्रश्न है- हम लड़कियां इस दर्दनाक रेप मर्डर केस से क्या सीखें? क्यों हमारे साथ इतना गलत किया गया? लोग कहते हैं लड़की से पूछ के किया होगा, पर जब उस 3 साल की नर्सरी की बच्ची के साथ उसका रेप किया गया उसके वैन ड्राइवर के द्वारा, तो आप क्या बोलेंगे? क्यों हमेशा ऐसे ना तैसे लड़की पे ही दोष लगाया जाता है?

उत्तर- प्रश्न एक ही है। प्रश्न लड़की के दोष का नहीं है, ये समस्या परिवार और समाज की है। अँधेरी रात में सड़क पर सांड, सांप और आदमी आता दिखाई दे तो सांड और सांप से डर नहीं लगेगा, आदमी से डर लगेगा। यह गंभीर समस्या है यह लड़की का दोष नहीं है, यह हवा दोष है, आज हवा में जहर फैला हुआ है, वातावरण विषाक्त है। उस सोच का दोष है, जिसने मनुष्य को पिशाच बना दिया है। पहले भी हमने कहा था, एक घर, एक गांव, एक समूह, कोई तो पहल करे, इंसान बनने और बनाने की। स्वामी विवेकानंद ने क्या लिखा-बी एंड मेक, बनो और बनाओ। हम गढें स्वयं को और दूसरों को भी गढ़ें। आज हिंदू-मुसलमान इतने ज्यादा क्यों हो गए हैं, इंसान क्यों घट गए है? राष्ट्रपति ए पी जे कलाम साहब लिखते हैं-मेरे पिताजी और रामेश्वरम के पंडित जी गहरे दोस्त थे, उन्होंने मुझे गीता पढ़ाई, तो मैंने गीता और कुरान दोनों पढ़ें। जिन्होंने इंसानियत की ओर कदम बढ़ाये हैं उन सभी ने इंसान होने की बात कही है। समस्या वही है जब तक इंसान में पशु हुंकारता रहेगा, समस्या जस की तस बनी रहेगी।

प्रश्नः--पीड़ित लेडी डॉक्टर रेप मर्डर केस में हम लड़कियां क्या करें? व्यर्थ ही पढ़- लिख रहे हैं, जब घर पर ही बैठना है, अपने ज्ञान का इस्तेमाल नौकरी के जरिये कर ही नहीं पाएंगे तो क्या पता कल कुछ भी हो सकता है, भगवान तो हैं नहीं जो आगे आने वाली घटना को जान सकें।

उत्तर- समस्या ये नहीं कि आप भगवान हो या भगवान नहीं हो, अगर परिवार, अगर समूह केवल ऐसे लोगों का बहिष्कार करना शुरू कर दें, तब भी बहुत हद तक समस्या का समाधान हो सकता है, पर हम उसे महिमामंडित

करने लग जाते हैं पूरी सरकार लग जाती है, बचाने में। समस्या यही है कि इंसान खो गया है, तो पशुओं के राज्य में, समाज में जो होना चाहिए, वही हो रहा है। अगर धरती पर जीवन संभव है, तो इंसान को आना चाहिए।

प्रश्नः-- क्या इंटर स्टेट मैरिज गलत है?

उत्तर- कोई गलत नहीं है, क्यों गलत होगी? जब हमने सभ्यता सीखी, जब हम सभ्य होना शुरू हुए, तो क्या जातियां थी? प्राचीन काल में वेदों में कितने उदाहरण मिल जाएंगे कि एक ही परिवार में कितनी जातियां रहती थीं। पंजाब में अभी भी एक पुत्र सिख हो गया तो एक पुत्र हिंदू है, वो पंजाबी है। थोड़ी उदारता दिखानी चाहिए, थोड़ा साहस भी दिखाना चाहिए। बात यह है कि हम इंसान हैं, इंसान के रूप में अपनी पहचान करना सीख जाएंगे, सारे झगड़े-फसाद, सारा उन्माद, सारी गड़बड़ियां खत्म हो जाएँगी। इंटर स्टेट हो या कोई भी, बस इतनी पहचान कर लो कि वो इंसान है, बस इतना काफी है, फिर आप इतना मान के चलो कि आप सुखी और सुरक्षित रहोगे। और अगर वो इंसान नहीं है, चाहे स्टेट हो या इंटर स्टेट हो, सब गड़बड़ है। जन्मकुंडली विवाह में क्यों मिलाते हैं? पर्सनैलिटी फैक्टर को ही तो मिलाते हैं। पर्सनैलिटी मिलता है या नहीं मिलता है, ये महत्त्वपूर्ण है।

प्रश्नः-– दोस्ती और प्यार में क्या अंतर है? जब एक लड़का-लड़की दोस्त हो तो कैसी दोस्ती इन दोनों के बीच होनी चाहिए, जिससे इनकी दोस्ती बरकरार रहे?

उत्तर -दोस्ती का मतलब हम एक-दूसरे के सुख-दुख में सहभागी बनते हैं। सुख-दुख बांटते हैं। एक दूसरे का दर्द समझते हैं। हमारी नजर और कहीं नहीं होती, भावनात्मक सहचर्य का नाम है दोस्ती, लेकिन दोस्ती एक से नहीं अनेक से हो सकती है, प्यार सेंटर्ड होता है, केन्द्रित होता है। दोस्ती का मतलब होता है- भावनात्मक सहभागिता और प्यार का मतलब होता है- जीवन के साथ सहभागिता हो। जिससे हम प्यार करते हैं वह हमारी जिंदगी का हिस्सा होता है, हमारे हाथ-पांव जैसा। उसमें निष्ठा की जरूरत पड़ती है, कमिटमेंट चाहिए। जहाँ तक यौन शुचिता की बात है, वह प्यार में भी आवश्यक है और दोस्ती में भी आवश्यक है। दोस्ती को अगर प्यार में बदलना चाहते हैं तो फिर आपको कमिटेड होना चाहिए।

प्रश्नः--जब वह लड़की चिल्ला रही होगी तो क्या उसकी पुकार भगवान के कानों तक नहीं पहुंची होगी? अरे ! इंसानों ने नहीं सुना होगा, पर भगवान तो सुने होंगे, कोई शक्ति उसको नहीं बचा पाई?

उत्तर-क्या वह भगवान के लिए चिल्ला रही थी? ध्यान रखें, भगवान सबकी सुनता है और भगवान किसी की भी नहीं सुनता है। भगवान किसी एक का नहीं है। भगवान समष्टि की व्यवस्था है। प्रकृति ने कुछ नियम बनाएँ हैं, प्रकृति के नियम प्रकृति में संचालित होते हैं, उसमें भगवान हस्तक्षेप नहीं करता। आपको मनुष्य बनाया है, तो आपको विवेक दिया है, आपको बुद्धि दी है, क्या आप अपनी बुद्धि का, अपने विवेक का, अपनी सामर्थ्य का सदुपयोग कर रहे हैं? अगर सदुपयोग नहीं कर रहे हैं तो भगवान को कोसना बंद करिए। भगवान ने कहा था कि इस समाज को आप पशु का समाज बना दें ? अपने कर्तव्यों का पालन करें, अपने कर्मों को, सुख-दुख को भोगें, भगवान को क्यों दोष देते हैं? ये तो बहुत निरर्थक बात हो गयी। वो रेप वाला भी कहेगा कि भगवान ने हमको ऐसी बुद्धि क्यों दे दी? भगवान के कंधे पर बोझ ना डालो। इंसान के रूप में उठकर खड़े हो जाओ और महसूस करो कि तुम इंसान हो और इंसान के रूप में तुम्हारा क्या कर्तव्य है। इंसान बनो और इंसान बनने में मदद करो, फिर ये जीवन बहुत खुशनुमा हो जाएगा। भगवान अपने हिसाब से चलेगा, भगवान हमारे हिसाब से नहीं चलेगा। द्रौपदी की लाज बचाने कृष्ण कब आये? महाभारत का पूरा प्रसंग पढ़ें, द्रौपदी ने तर्क किए, द्रौपदी ने शास्त्रार्थ किए, द्रौपदी ने भीष्म की ओर देखा, द्रौपदी ने द्रोण की ओर देखा, द्रौपदी ने धृतराष्ट्र की ओर देखा, धृतराष्ट्र से भी सवाल किए, पूरा प्रसंग हो गया तब द्रौपदी ने पुकार लगाई- हे कृष्ण, हे द्वारकावासी ! तब पुकारना शुरू किया भगवान को। उसे लगा ये इंसान हमारी नहीं सुनेंगे, पर जब वो भगवान को सुनाना शुरू की तो भगवान ने सुना। परंतु उससे पहले जब भगवान कृष्ण की उँगली कटी थी तो उसने अपनी साड़ी फाड़ कर बांधी थी, वही कई गुना होकर लौट आया।

प्रश्नः--दबी-कुचली भावना है मनोरोग, मनोरोग आज महामारी के रूप में है जैसा आप बता रहे हैं, ये कैसे ठीक होगा, फिर से उन्मुक्त कैसे होंगे?

उत्तर-जीवन शैली के ठीक होने से मनोरोग ठीक होता है। मनोरोगों का सीधा संबंध जीवन शैली से है। अपने जीवनशैली से मन को मलिन करते रहोगे तो क्या होगा? मनोरोग ही होगा। जो करना चाहिए अर्जुन, वो नहीं करते हो, भगवान ने गीता में कहा, इसलिए अवसाद से घिर गए हो, अर्जुन को डिप्रेशन हो गया था, विषाद हो गया था, मनोरोग हो गया था। आज के युग की समस्या क्या है कि सभी ज्ञानी हैं, आदमी वो सोचता है जो नहीं सोचना चाहिए और बोलता है ज्ञानियों की तरह। जबकि खुद ही अज्ञानी है, पर वह मान लेता है कि हम बहुत काबिल हैं। तो मनोरोग होगा ही, डिप्रेशन होगा ही। आज के आदमी का मनमुख एक नहीं है, जो मन में है वो मुख में नहीं है, और जो मुख में है वो मन में नहीं है, परिणामस्वरूप मनोग्रंथियां हो गयी हैं। दूसरी बात, उसकी भावना टेढ़ी-मेढ़ी है, इसलिए भावनाओं को दबा कर रखता है। निवारण यही है, निराकरण यही है, विवेक। आपको क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसका सुस्पष्ट ज्ञान होना चाहिए। जो सही है वही सोचिए और वही करिये। मोह और आसक्ति के डोर से जीवन बंधा है, तो जीवन मनोरोगी होगा ही, तो जीवन शैली अगर हम सुधार लें, खान-पान से लेकर रहन-सहन ही तो जीवन शैली है। सात्विकता रोग का नाश करती है, सतोगुण वाले व्यक्ति को कोई रोग नहीं होता, तमोगुण वाला व्यक्ति रोग से घिरा रहता है। जीवन शैली है तमोगुणी और बातें हैं सतोगुणी, विरोधाभास अगर रहेगा तो मनोरोग होगा। दुनिया में सब कुछ तो हमारे लिए नहीं है, जीवन शैली को सुधारकर जीयें। ये दिल मांगे मोर की कल्पना ठीक नहीं है। संतोष तो है नहीं, ये भी मिल जाए वो भी मिल जाए, यही अनर्थ का कारण है। ये जीवन यहीं तक सीमित नहीं है,किससे झूठ बोलोगे? प्रकृति से झूठ बोलोगे? चित्त में तो अंकित हो गया जो आपने सोचा है। कर्म रहस्य क्या है? जो आप प्रारब्ध को लेकर आए हो, उसे भोगना ही पड़ेगा, कोई भी कर्म बिना भोगे नष्ट नहीं होता, पर हम इसे मानेंगे नहीं, झूठमूठ का कुतर्क करेंगे, मेरे साथ ही ऐसा क्यों हो गया? तो दुखी-परेशान-हैरान, अवसाद डिप्रेशन में रहो। तो जीवन शैली बदलें, आहार-विहार-निहार को ठीक रखें, तो मनोरोग नहीं होगा। उन्मुक्त रहने के लिए किन्हीं विचारों में, मान्यताओं में, धारणाओं में कैद न हों, कैदी ना बनें, बस इतनी सी बात है।

सितम्बर माह की गतिविधियाँ

दिनांक 01-09-24.को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल प्रज्ञा गीत के माध्यम से कहा गुरुदेव कहते हैं हमारा है यह दृढ़संकल्प नया इंसान बनायेंगे नया संसार बनायेंगे। आज दुनियाँ जिस गर्त में पड़ी है उस स्थिति में कोई तो आगे आये,जो हमारे जीवन को हमारे समाज को हमारे राष्ट्र को हमारी संस्कृति के मूल्यों को फिर से स्थापित करे,तब फिर हमलोग खुशरहेंगे।रहेंगे मिल जूल कर एक हसेंगे और हंसायेंगे।लेकिन खुश रहने का उपाय क्या है?आज के दिनों में यह महत्वपूर्ण बात है।आज की कठिन परिस्थितयां और कुछ जटिल लोगों का सामना करना , खुश रहने नहीं देती है।आज यह बहुत गहरा प्रश्न है।कहीं भाई भाई में,पति पत्नी में,भाई बहन में कभी एक दूसरे राष्ट्र से भी लड़ाई होती है,अगर आप सोचते हैं यह अपने आप ठीक हो जाएगा,यह सोच आपका गलत भी हो सकता है।इससे तनाव बढ़ जाता है।कैसे खुश रहें महत्वपूर्ण बात है।जटिल लोगों से बचके रहना है।हम कैसे शांत रहें।कभी कभी परिस्थितियां भी आपको भड़का सकती है और कुछ लोग भी उकसायेंगे,ऐसी स्थिति में आप विवेक का इस्तेमाल कर शांत रहें,कोई प्रतिक्रिया न दें।सोच समझकर प्रतिक्रिया दें,जिससे हमारा संबंध भी बना रहे और समाज भी संतुलित रहे।इसलिए अच्छेव्यक्ति से मित्रता करिए,दुखी व्यक्ति से करुणाकरिए,सही काम करने वाले को देख कर मुदित रहिए,ग़लत लोगो की उपेक्षा करिए।महर्षि पंतनजलि के सूत्र को अपना कर जीवन जीना चाहिए।सबसे हिलमिल रहिए और तनाव दबाव मुक्त रहिए। कक्षा की समाप्ति के पश्चात प्रखंड समितियों का पुनर्गठन किया गया तथा भविष्य के लिए लक्ष्य निर्धारित किया गया।अपने क्षेत्रीय समस्याओं को साझा किया गया। सहरसा जिला से 125परिजनों प्रशिक्षण केलिए शांतिकुंज भेजा गया।जहां उनका सत्र 30 अगस्त से 3 सितम्बर तक चलेगा। तथा 15से 17नवम्बर को शांतिकुंज में (ज्योति कलशयात्रा)का प्रशिक्षण आयोजित है,इस पर चर्चा हुई।

शांतिकुंज में बाल संस्कारशाला के बच्चे, गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के छात्र - छात्राएं, युवा मंडल एवम युवती मंडल

अच्छी पुस्तक जीवंत देव प्रतिमा हैं, इनको पढ़ने से तत्काल उल्लास और प्रकाश मिलता है। उस उल्लास और प्रकाश को जन जन तक पहुँचाते गायत्री शक्तिपीठ,सहरसा के परिजन ...

व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने भावना के महत्व को बताते हुए कहा-भावना के कई रूप होते हैं,इसकी तीन आयाम होतेहैं(dimension)होते हैं।लम्बाई, चौराई, गहराई या जिसे ऊंचाई भी कहते हैं।three dimension कहते हैं।जब भावना में गहराई बढ़ती तो प्यार बढ जाता है और भावना में व्यापकता बढ जाती है दोस्ती बढ़ती जाती है। जैसे एक लड़की दोस्त है,आपस में मिलते जुलते हैं,हँसते बोलते हैं,मस्त रहते हैं अपनी छोटी बड़ी बातें शेयर करते हैं लेकिन जब भावनाओं की गहराई में उतरनें लगते हैं तो प्यार हो जाता है। प्यार में ये होता है कि भावनाओं की गहराई में इतना उतर जाता है कि दूर रहें या पास रहें,एक होकर रहता है।प्यार धीरे धीरे दो से एक कर देता है।इसलिए दोस्त कई हो सकते हैं प्यार कई नहीं होसकता। प्यार देह से आत्मा तक की यात्रा है पर दोस्ती आत्मा तक की यात्रा नहीं है। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कार्यकारिणी समिति-युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के सहयोगी की महत्वपूर्ण बैठक हुई जिसमें मुख्य रुप से -समय दान, अंशदान,ज्ञान रथ में सहयोग करने वाले सभी परिजनों के कर्तव्य पालन के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर शांतिकुंज से प्रशिक्षण प्राप्त कर लौटे बाल संस्कारशाला के125 बच्चों ने अपना अनुभव साझा करते हुए बताया बर्तमान समय में शांतिकुंज अच्छे मानव निर्माण की महान प्रयोगशाला है,एवं धरती का स्वर्ग है।

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में ट्रस्टी डॉक्टर अरुण कुमार जयसवाल जी की अध्यक्षता में   सहरसा जिला के शहरी क्षेत्र की बैठक संपन्न हुई जिसमें मंदिर कार्यकारणी समिति, प्रज्ञा मंडल, महिला मंडल, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा समिति के सदस्य, युवा मंडल, युवती मंडल का पुनर्गठन किया गया।बैठक को संबोधित करते हुए डॉक्टर अरुण कुमार जयसवाल ने परिजनों को समय दान, अंश दान एवम गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न अभियानों में अपना योगदान देने हेतु प्रेरित किया। शक्तिपीठ, सहरसा द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों,अभियानों, बाल संस्कारशाला, भोजन प्रसाद बनाने, रेलवे स्टेशन, सदर अस्पताल में भोजन वितरण, शक्तिपीठ व्यवस्था में कार्यकर्ताओं की भूमिका सुनिश्चित की गई।शांतिकुंज परिचय सत्र शिविर (30 अगस्त से 3 सितंबर) में शामिल हुए गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के छात्र - छात्राओं, बाल संस्कारशाला के बच्चों, युवा मंडल , युवती मंडल ने शांतिकुंज के अपने अनुभवों को साझा किया।वरिष्ठ परिजन श्री हरे कृष्ण साह की धर्म पत्नी और समर्पित कार्यकर्त्री सुमित्रा देवीके निधनपर उनकी आत्मा की शांति और सद्गति के लिए प्रार्थना की गई।शांतिपाठ के साथ बैठक का समापन हुआ।

दिनांक 15--9—24, व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने क्वांटम कंप्यूटिंग और जीवन मूल्य के संबंध में कहा-पहले हम जीवन को समझने की कोशिश करते है-जीवन चलता है कैसे?जीवन चलता है पुण्य,तप और ज्ञान से। उन्होंने कहा-पुण्य आप को सुख और सौभाग्य देता है,और आप के जीवन को संसार में प्रकाशित करता है।जो आपके सत्कर्म,शुभकर्म दान से आता है।तप आंतरिक संपदा है,बाहरी संपदा नहीं है।तप आपको उर्जावान बनाए रखता है।अगर आपकी इच्छा नहीं है तो आपका दुर्भाग्य आपतक फटक नहीं सकता है। तप का मतलब सिर्फ व्रत उपवास नहीं है,तप ज्यादा मानसिक होता है,फिर तो आप अनेक लोगों के जीवन में भी सौभाग्य की सृष्टि कर सकते हैं। तपस्या की चेतना से आपकी ग्रंथियां,चक्र, प्रकाशित रहते हैं,तो कोई नक्षत्र, किसी भी कीमत पर आपको बुरा फल नहीं देगा।दशाएं आती रहेगी,जाती रहेगी।उन्होंने कहा अगर आप तप के साथ विवेक को संयुक्त कर चलते हैं तब।पुण्य और तप एक तरह से आपके जीवन का ईंधन है।जैसे पुण्य हेलीकॉप्टर है और तप हवाई जहाज।उड़ता आसमान में हेलीकॉप्टर भी पर कम ऊँचाई पर उड़ता है,हवाई जहाज़ के बराबर नहीं उड़ सकता।तप गिने चुने लोगों के पास होता है, पुण्य सभी लोग दान सत्कर्म से अर्जित कर सकते हैं। ज्ञान,ऐसा व्यक्ति जो आत्मबोध संपन्न है,आत्मा में अवस्थित है,अनुभूति संपन्न है।ज्ञान किसी ईंधन के बल पर नहीं चलता,स्वऊर्जा से चलता है।ज्ञान और भक्ति में अंतर नहीं है,एक सिक्के के दो पहलू है।उसका पतन संभव नहीं है,उसको गिराया नहीं जा सकता। क्वांटम कंप्यूटिंग संवंध में कहा-नाइन्थ वान्डर आफ वर्ल्ड का एवोल्यूशन जर्नी क्वांटम कंप्यूटिंग है। पहले कंप्यूटर आया,ऐआई आ गया, चैट जीपीटी चल रहा है,आगे क्वांटम कंप्यूटिंग की ओर दुनिया जा रही है।यह लो टेम्परेचर पर काम करता है।कहा जा रहा है कि इससे दुनिया के हार्ड से हार्ड प्रॉब्लम सॉल्व हो जाएगी, स्पेशली मेडिकल साइंस में।इसमें कोई शक नहीं कि यह मनुष्य द्वारा निर्मित सबसे रोमांचक तकनीक है।पर दुर्लभ बीमारियों के इलाज के साथ इसके दुरुपयोग भी शुरू हो चुके हैं।यकीनन एआई हमारा भविष्य है,पर इसे नियंत्रित कौन करेगा?आशंका हैकि यह आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (ए आई) अपने सृजनकर्ता मनुष्यों से भी आगे निकल जाएगी,अपने मालिक को ग़ुलाम बना लेगी।पर हमे लगता है ऐसा नहीं होगा।क्वांटम कंप्यूटिंग को करेंट नहीं चाहिए ,जिस तरह ज्ञानी को भी ईंधन नहीं चाहिए उसी तरह क्वांटम को भी ईंधन नहीं चाहिए।क्वांटा या क्वांटम कहे, यह कोई पदार्थ नहीं है,ऊर्जा है,अपने आप में एनर्जी पैकेट है।इसका दुरुपयोग संभव है,ये नीचे गिर सकता है ।हाँ ज्ञानी का पतन संभव नहीं है।पर अभी तो हम मनुष्य ही पूरी तरह से नहीं बने हैं।राष्ट्रकवि दिनकर कहते हैं पूँछ झड़ी नख दंत झड़े पशुतम झरना बाक़ी है,गुरुदेव भी कहते हैं मनुष्यका जन्म तो सहज होता है पर मनुष्यता बहुत कठिनाई से मिलती है।इसी मनुष्य केकारण एआई का दुरुपयोग संभव है। अगर मनुष्य ज्ञानी हो जाये उसमें देवत्व का उदय हो जाये फिर सदुपयोग होगा।ज्ञान की देवी गायत्री के शरण में जाये तो संभव है।

आपने क्या खोजा ये महत्वपूर्ण नहीं है,अगर प्रकृति के साथ रेजोनेंस नहीं है,सिम्बॉयसिस नहीं है,तो विनाश होगा।क्या ए आई बलात्कार को रोक पाएगा। सबसे महत्वपूर्ण हैमनुष्य का मेंटल पॉल्यूशन दूर होना चाहिए तो दुनिया का सारा पॉल्यूशन दूर हो जायेगा।तो सबसे महत्वपूर्ण है जीवन और जीवन मूल्य की व्यवस्था। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में सहरसा उपजोन के पांचो जिला, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, तथा वेगूसराय की बैठक दीपप्रज्वलित कर किया गया।बैठक में सभी जिला के जिला संयोजक ने अपने अपने जिला के साल भरके कार्य का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा आगामी साल की कार्य योजना बनाई गई। संगठन में ज्योति कलश यात्रा पर विस्तार से चर्चा की गई। इस संगठन साधना सत्र में सप्त क्रांति के अन्तर्गत स्वास्थ्य क्रांति पर सभी ज़िले के प्रतिनिधि ने अपने अपने विचार को रखा।अरुण जी ने कहा विचार क्रांति का मतलब जो आपके जीवन को आमूल चूल बदल दे। क्रांति मतलब परिवर्तन,आमूल चूल परिवर्तन।आंदोलन मतलब हलचल,हलचल पैदा करना।क्रांति का मतलब परिवर्तन तक पहुँचा देना।उन्होंने कहा-जीवन की सार्थकता मनुष्य के ज्ञान के,समझ के,चेतना के तल पर निर्भर करता है।अपने गायत्री परिजनों से गायत्री क्या होती है?पूछा जाये तो सबकी गायत्री अलग अलग होगी।अगर गायत्री का तत्वचिंतन पता चल जाये तो सचमुच गायत्री उनके जीवन में फलित हो जाएगी।सबसे महत्वपूर्ण हैमनुष्य का मेंटल पॉल्यूशन दूर होना चाहिए तो दुनिया का सारा पॉल्यूशन दूर हो जायेगा।तो सबसे महत्वपूर्ण है जीवन और जीवन मूल्य की व्यवस्था। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में सहरसा उपजोन के पांचो जिला, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, तथा वेगूसराय की बैठक दीपप्रज्वलित कर किया गया।बैठक में सभी जिला के जिला संयोजक ने अपने अपने जिला के साल भरके कार्य का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा आगामी साल की कार्य योजना बनाई गई। संगठन में ज्योति कलश यात्रा पर विस्तार से चर्चा की गई। इस संगठन साधना सत्र में सप्त क्रांति के अन्तर्गत स्वास्थ्य क्रांति पर सभी ज़िले के प्रतिनिधि ने अपने अपने विचार को रखा। अरुण जी ने कहा विचार क्रांति का मतलब जो आपके जीवन को आमूल चूल बदल दे। क्रांति मतलब परिवर्तन,आमूल चूल परिवर्तन।आंदोलन मतलब हलचल,हलचल पैदा करना।क्रांति का मतलब परिवर्तन तक पहुँचा देना।उन्होंने कहा-जीवन की सार्थकता मनुष्य के ज्ञान के,समझ के,चेतना के तल पर निर्भर करता है।अपने गायत्री परिजनों से गायत्री क्या होती है?पूछा जाये तो सबकी गायत्री अलग अलग होगी।अगर गायत्री का तत्वचिंतन पता चल जाये तो सचमुच गायत्री उनके जीवन में फलित हो जाएगी।

अपने अपने विचार रखते अलग-अलग जिलों के मुख्य ट्रस्टी और युवा प्रकोष्ठ के संचालकगण

विभिन्न जिलों के महिला मंडल की संचालिका...

भोजन प्रसाद ग्रहण करते परिजन

बाल संस्कारशाला बस स्टैंड में निःशुल्क पढ़ाई करते झुग्गी झोपड़ी के बच्चे। समय-सुबह 6:30 से 7:30, कुल संख्या- 30

महीने के अंतिम रविवार को 24 अलग- अलग नए घरों में देव स्थापना एवं एक कुंडीय गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया गया।

प्रत्येक महीना के अंतिम रविवार की तरह दिनांक 29/09/2024 (रविवार) को सहरसा जिला के कहरा प्रखंड अंतर्गत बेंगहा गांव में 24 अलग- अलग नए घरों में देव स्थापना एवं एक कुंडीय गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया गया। साथ ही, पर्यावरण संतुलन हेतु प्रत्येक घरों में पौधा वितरित किया गया | गुरुदेव के विचारों को अखण्ड ज्योति पत्रिका एवं दीवार लेखन के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया। जिसमें गायत्री परिवार सहरसा के युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं प्रज्ञा मंडल के सक्रिय कार्यकर्ताओं ने अहम भूमिका निभाई।

गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के बच्चों का फाइनल परीक्षा लेते हुए

दैनिक समाचार पत्रो में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित

15 से 17 नवम्बर को शांतिकुंज में ज्योति कलशयात्रा प्रशिक्षण आयोजित होगी : डॉ अरुण कुमार जायसवाल

मीडिया दर्शन/ सहरसा। गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुई।व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डा अरुण कुमार जायसवाल प्रज्ञा गीत के माध्यम से कहा गुरुदेव कहते हैं हमारा दृढ़संकल्प है नया संसार बनायेंगे।आज दुनिया जिस गर्त में पड़ा है उस स्थिति में कोई तो

आगे आये,जो हमारे जीवन को हमारे समाज को हमारे राष्ट्र को हमारे संस्कृति के मूल्यों को फिर से स्थापित करे।तब फिर हमलोग खुश, रहेंगे मिलजुल कर साथ रहेंगे और हसेंगे और हंसायेंगे।लेकिन खुश रहने का उपाय क्या है ?आज के दिनों में यह महत्वपूर्ण बात है।इसके समाधान में आजकल की परिस्थितयां और कुछ जटिल लोगों का सामना करना पड़ता है।आजकल यह बहुत गहरा प्रश्न है।कहीं भाई भाई में,पति पत्नी में,भाई बहन में कभी एक दूसरे राष्ट्र से भी लड़ाई होती है,अगर आप सोचते हैं यह अपने आप ठीक हो जाएगा,यह सोच आपका गलत भी हो सकता है।इससे तनाव बढ़ जाता है।कैसे खुश रहें महत्वपूर्ण बात है।जटिल लोगों से बचके रहना है।हम कैसे शांत रहें।कभी कभी परिस्थितियां भी आपको भड़का सकती है और कुछ लोग भी उसकाएंगे।ऐसी स्थिति में आप शांत रहें,कोई प्रतिक्रिया न दें।सोच समझकर प्रतिक्रिया दें,जिससे हमारा समाज भी बना रहे इसलिए अच्छे व्यक्ति से मित्रता करिए।सबसे हिलमिल रहिए और तनाव दबाव मुक्त रहिए।बैठक के समाप्ति के पश्चात प्रखंड समितियों का पुनर्गठन किया गया तथा भविष्य के लिए लक्ष्य निर्धारित किया गया।अपने क्षेत्रीय समस्याओं को साझा किया गया। जिला से 125परिजनों प्रशिक्षण के लिए शांतिकुंज भेजा गया।जहां उनका सत्र 30 अगस्त से 3 सितम्बर तक चलेगा।तथा 15से 17नवम्बर को शांतिकुंज में ज्योति कलशयात्रा प्रशिक्षण आयोजित होगी।

कैसे खुश रहें, यह महत्वपूर्ण बात है : डॉ अरुण

गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में जुटे श्रद्धालु

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र

सबसे हिल मिल कर रहिए, तनाव और दबाव से मुक्त रहेंगे : अरुण

बैठक में भाग लेते डॉ. अरुण जायसवाल एवं अन्य।

भास्कर न्यूज|सहरसा

प्रज्ञा गीत के माध्यम से गुरुदेव कहते हैं- हमारा दृढ़संकल्प है नया संसार बनायेंगे। आज दुनिया जिस गर्त में पड़ा है उस स्थिति में कोई तो आगे आए जो हमारे जीवन,समाज एवं राष्ट्र के सांस्कृतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करे। तब फिर हमलोग खुश और मिलजुल कर साथ रहेंगे। लेकिन खुश रहने का उपाय क्या है?आज के दिनों में यह महत्वपूर्ण बात है। कैसे खुश रहें, महत्वपूर्ण बात है।ये बातें डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने रविवार को गायत्री शक्ति पीठ में आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि इसके समाधान में आजकल की परिस्थितियां और कुछ जटिल लोगों का सामना करना पड़ता है। जटिल लोगों से बचके रहना है। उन्होंने कहा कि कभी कभी परिस्थितियां भी आपको भड़का सकती है और कुछ लोग भी उकसाएंगे । ऐसी स्थिति में आप शांत रहें,कोई प्रतिक्रिया न दें।

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित

15 से 17नवम्बर को शांतिकुंज में ज्योति कलशयात्रा प्रशिक्षण आयोजित होगी: डॉ अरुण कुमार जायसवाल

मीडिया दर्शन/ सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुई।व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डा अरुण कुमार जायसवाल प्रज्ञा गीत के माध्यम से कहा गुरुदेव कहते हैं हमारा दृढ़संकल्प है नया संसार बनायेंगे।आज दुनिया जिस गर्त में पड़ा है उस स्थिति में कोई तो आगे आये,जो हमारे जीवन को हमारे समाज को हमारे राष्ट्र को हमारे संस्कृति के मूल्यों को फिर से स्थापित करे।तब फिर हमलोग खुश, रहेंगे मिलजुल कर साथ रहेंगे और हसेंगे और हंसायेंगे।लेकिन खुश रहने का उपाय क्या है?आज के दिनों में यह महत्वपूर्ण बात है।इसके समाधान में आजकल की परिस्थितयां और कुछ जटिल लोगों का सामना करना पड़ता है।आजकल यह बहुत गहरा प्रश्न है। कहीं भाई भाई में, पति पत्नी में, भाई बहन में कभी एक दूसरे राष्ट्र से भी लड़ाई होती है,अगर आप सोचते हैं यह अपने आप ठीक हो जाएगा,यह सोच आपका गलत भी हो सकता है।इससे तनाव बढ़ जाता है। कैसे खुश रहें महत्वपूर्ण बात है। जटिल लोगों से बचके रहना है। हम कैसे शांत रहें। कभी कभी परिस्थितियां भी आपको भड़का सकती है और कुछ लोग भी उसकाएंगे।ऐसी स्थिति में आप शांत रहें,कोई प्रतिक्रिय न दें।सोच समझकर प्रतिक्रिया दें,जिससे हमारा समाज भी बना रहे इसलिए अच्छे व्यक्ति से मित्रता करिए। सबसे हिलमिल रहिए और तनाव दबाव मुक्त रहिए।बैठक के समाप्ति के पश्चात प्रखंड समितियों का पुनर्गठन किया गया तथा भविष्य के लिए लक्ष्य निर्धारित किया गया।अपने क्षेत्रीय समस्याओं को साझा किया गया। जिला से 125परिजनों प्रशिक्षण के लिए शांतिकुंज भेजा गया।जहां उनका सत्र 30 अगस्त से 3 सितम्बर तक चलेगा।तथा 15से 17नवम्बर को शांतिकुंज में ज्योति कलशयात्रा प्रशिक्षण आयोजित होगी।

रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में कार्यक्रम में मौजूद ट्रस्टी एवं अन्य। • हिन्दुस्तान

मिलजुल कर रहना ही हमारी संस्कृति

सहरसा। शहर के गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल प्रज्ञा गीत के माध्यम से कहा गुरुदेव कहते हैं हमारा दृढ़संकल्प है नया संसार बनायेंगे। आज दुनिया जिस गर्त में पड़ा है उस स्थिति में कोई तो आगे आये,जो हमारे जीवन को हमारे समाज को हमारे राष्ट्र को हमारे संस्कृति के मूल्यों को फिर से स्थापित करे। ,अगर आप सोचते है यहअपने आप ठीक हो जाएगा,यह सोच आपका गलत भी हो सकता है। इससे तनाव बढ़ जाता है। बैठक के समाप्ति बाद प्रखंड समितियों का पुनर्गठन किया गया तथा भविष्य के लिए लक्ष्य निर्धारित किया गया। अपने क्षेत्रीय समस्याओं को साझा किया गया।

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित

शांतिकुंज अच्छे मानव निर्माण की महान प्रयोगशाला व धरती का स्वर्ग हैः डॉ अरुण कुमार जायसवाल

जटिल लोगों से बचें, तनाव व दबावमुक्त रहें : डा. अरुण

संबोधित करते ट्रस्टी • सौजन्य शक्तिपीठ

संस, जागरण • सहरसा: रविवार को गायत्री शक्ति पीठ में साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डा. अरुण कुमार जायसवाल ने प्रज्ञा गीत के माध्यम से कहा गुरुदेव कहते हैं हमारा दृढ़संकल्प है नया संसार बनाएंगे। आज दुनिया जिस गर्त में पड़ा है। उस स्थिति में कोई तो आगे आए,जो हमारे जीवन को हमारे समाज को, हमारे राष्ट्र को, हमारी संस्कृति के मूल्यों को फिर से स्थापित करें। तब फिर हमलोग खुश रहेंगे, मिलजुल कर साथ रहेंगे, हसेंगे और हंसाएंगे, लेकिन खुश रहने का उपाय क्या है?

आज यह सबसे महत्वपूर्ण बात है। इसके समाधान में आजकल की परिस्थितियां और कुछ जटिल लोगों का सामना करना पड़ता है। आजकल यह बहुत गहरा प्रश्न है। कहीं भाई- भाई में, पति पत्नी में, भाई- बहन में, कभी एक दूसरे राष्ट्र से भी लड़ाई होती है,अगर आप सोचते हैं यह अपने आप ठीक हो जाएगा, तो यह सोच आपका गलत भी हो सकता है। इससे तनाव बढ़ जाता है।

कैसे खुश रहें महत्वपूर्ण बात है। कहा कि जटिल लोगों से बचकर रहना है। हम कैसे शांत रहें। कभी कभी परिस्थितियां भी आपको भड़का सकती हैं और कुछ लोग भी उसकाएंगे, ऐसी स्थिति में आप शांत रहें,कोई प्रतिक्रिया नहीं दें। सोच समझकर प्रतिक्रिया दें,जिससे हमारा समाज भी बना रहे। इसलिए अच्छे व्यक्ति से मित्रता कीजिए। सबसे हिलमिल रहिए और तनाव दबाव मुक्त रहिए। दूसरे सत्र में बैठक के पश्चात प्रखंड समितियों का पुनर्गठन किया गया तथा भविष्य के लिए लक्ष्य निर्धारित किया गया। अपने क्षेत्रीय समस्याओं को साझा किया गया। सहरसा जिला से 125 परिजनों को प्रशिक्षण के लिए शांतिकुंज भेजा गया। जहां उनका सत्र 30 अगस्त से 3 सितंबर तक चलेगा। तथा 15 से 17 नवंबर को शांतिकुंज में (ज्योति कलश यात्रा) प्रशिक्षण आयोजित होगी।

रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में मौजूद ट्रस्टी व अन्य। • हिन्दुस्तान

जीवन में भावना का है महत्व:पप्पू

सहरसा। शहर के गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। संबोधित करते डा. अरुण कुमार जायसवाल ने भावना के महत्त्व को बताया। कहा जब भावना में गहराई बढ़ती तो प्यार बढ़ जाता है, दोस्ती बढ़ती जाती है। आपसी समझ बढ़ती है। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कार्यकारिणी समिति- युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के सहयोगी की बैठक हुई। जिसमें समय दान, अंशदान, ज्ञान रथ में सहयोग करने वाले परिजनों के कर्तव्य पालन हेतु प्रेरित किया गया।

बैठक को संबोधित करते ट्रस्टी • जागरण

भावना की गहराई बढ़ने पर बढ़ जाती है व्यापकता

संस, सहरसा: रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डा. अरुण कुमार जायसवाल ने भावना के महत्व को बताते हुए कहा कि भावना के कई रूप होते हैं, इसके तीन आयाम होते हैं। लम्बाई, चौड़ाई, गहराई या जिसे ऊंचाई भी कहते हैं।

कहा कि जब भावना में गहराई बढ़ती तो प्यार बढ़ जाता है और भावना में व्यापकता बढ़ जाती है, दोस्ती बढ़ती जाती है। जैसे एक लड़की दोस्त है,आपस में मिलते- जुलते हैं, हंसते बोलते हैं, मस्त रहते हैं अपनी छोटी बड़ी बातें शेयर करते हैं, लेकिन जब भावनाओं की गहराई में उतरने लगते हैं, तो प्यार हो जाता है। प्यार धीरे- धीरे दो से एक कर देता है। इसलिए दोस्त कई हो सकते हैं प्यार कई नहीं हो सकता। प्यार देह से आत्मा तक की यात्रा है, परंतु दोस्ती आत्मा तक की यात्रा नहीं है।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कार्यकारिणी समिति-युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के सहयोगियों की महत्वपूर्ण बैठक हुई। बैठक में मुख्य रूप से समय दान, अंशदान,ज्ञान रथ में सहयोग करने वाले सभी परिजनों के कर्तव्य पालन के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर शांतिकुंज से प्रशिक्षण प्राप्त कर लौटे बाल संस्कारशाला के 125 बच्चों ने अपना अनुभव साझा किया। इनलोगों ने बताया कि वर्तमान समय में शांतिकुंज अपने मानव निर्माण की महान प्रयोगशाला है,एवं धरती का स्वर्ग है।

प्यार देह से आत्मा तक की यात्रा दोस्ती आत्मा तक की यात्रा नहीं

सहरसा| भावना के कई रूप होते हैं। इसके तीन आयाम होते हैं। लम्बाई, चौड़ाई,गहराई या जिसे ऊंचाई भी कहते हैं। जब भावना में गहराई बढ़ती है तो प्यार बढ़ जाता है और भावना में व्यापकता बढ़ जाती है। दोस्ती बढ़ती जाती है। आपस में मिलते जुलते हैं और अपनी छोटी बड़ी बातें शेयर करते हैं, लेकिन जब भावनाओं की गहराई में उतरने लगते हैं तो प्यार हो जाता है। प्यार धीरे धीरे दो से एक कर देता है। इसलिए दोस्त कई हो सकते हैं लेकिन प्यार कई नहीं हो सकता। ये बातें डॉ अरूण कुमार जायसवाल ने रविवार को स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुई कही। उन्होंने कहा कि प्यार देह से आत्मा तक की यात्रा है पर दोस्ती आत्मा तक की यात्रा नहीं है। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कार्यकारिणी समिति-युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के सहयोगी की महत्वपूर्ण बैठक हुई। जिसमें मुख्य रुप से समय दान, अंशदान,ज्ञान रथ में सहयोग करने वाले सभी परिजनों को कर्तव्य पालन के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर शांतिकुंज से प्रशिक्षण प्राप्त कर लौटे बाल संस्कारशाला के 125 बच्चों ने अपना अनुभव साझा किया।

गायत्री शक्तिपीठ : व्यक्तित्व परिष्कार सत्र व ज्योति कलश यात्रा पर चर्चा

सहरसा, अंगभारत । गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया। व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डा अरुण कुमार जायसवाल ने क्वांटम कंप्यूटिंग और जीवन मूल्य के संबंध में कहा कि पहले हम जीवन को समझने की कोशिश करते है। जीवन चलता है कैसे? जीवन चलता है पुण्य, तप और ज्ञान से। उन्होंने कहा-पुण्य आप को सुख और सौभाग्य देता है और आप के जीवन को संसार में प्रकाशित करता है। तप आंतरिक संपदा है, बाहरी संपदा नहीं है। तप आपको उर्जावान बनाए रखता है। अगर आपकी इच्छा नहीं है तो आपका दुर्भाग्य आपतक फटक नहीं सकता है। तप का मतलब सिर्फ व्रत उपवास नहीं है, तप ज्यादा मानसिक होता है, फिर तो आप अनेक लोगों के जीवन में भी सौभाग्य की सृष्टि कर सकते हैं।तपस्या की चेतना से आपको इंद्रियां, चक्र, प्रकाशित रहते हैं, तो कोई नक्षत्र, किसी भी कीमत पर आपको बुरा फल नहीं देगा। दशाएं आते रहेंगी, जाते रहेंगी। उन्होंने कहा अगर आप तप के साथ विवेक को संयुक्त कर चलते हैं तब पुण्य और तप एक तरह से आपके जीवन का ईंधन है। जैसे पुण्य हेलीकॉप्टर है और तप हवाई जहाज। क्वांटम कंप्यूटिंग संबंध में कहा- अमेरिका के अर्थशास्त्री ने कहा-नाइन्थ वन्डर आफ वर्ल्ड का इवोल्यूशन बनी क्वांटम कंप्यूटिंग है।कार्यक्रम के दूसरे सत्र में सहरसा क्षेत्र के पांचो जिला, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, तथा बेगूसराय का बैठक दीप प्रज्वलित कर किया गया।बैठक में सभी जिला के जिला संयोजक ने अपने अपने जिला के साल भर के कार्य का प्रतिवेदन प्रस्तुत किए तथा आगामी साल के लिए कार्य योजना बनाई गई। संगठन में ज्योति कलश यात्रा पर विस्तार से चर्चा की गई।

पुण्य, तप और ज्ञान से चलता है जीवन : डा. अरुण

संस, सहरसा: रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। संबोधित करते हुए डा. अरुण कुमार जायसवाल ने जीवन मूल्य के संबंध में कहा कि पहले हम जीवन को समझने की कोशिश करते है- जीवन चलता है कैसे ? जीवन चलता है पुण्य,तप और ज्ञान से।

कहा कि पुण्य आप को सुख और सौभाग्य देता है,और आप के जीवन को संसार में प्रकाशित करता है। तप आंतरिक संपदा है, बाहरी संपदा नहीं है। तप आपको ऊर्जावान बनाए रखता है। अगर आपकी इच्छा नहीं है तो आपका दुर्भाग्य आप तक फटक नहीं सकता है। कहा कि तप का मतलब सिर्फ व्रत उपवास नहीं

संबोधित करते ट्रस्टी • सौजन्य: गायत्री शक्तिपीठ

है,तप ज्यादा मानसिक होता है,फिर तो आप अनेक लोगों के जीवन में भी सौभाग्य की सृष्टि कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि तपस्या की चेतना से आपकी ग्रंथियां,चक्र, प्रकाशित रहते हैं, तो कोई नक्षत्र, किसी भी कीमत पर आपको बुरा फल नहीं देगा। दशाएं आती रहेगी,जाती रहेगी। कहा कि अगर आप तप के साथ विवेक को संयुक्त कर चलते हैं तब पुण्य और तप एक तरह से आपके जीवन का ईंधन बन जाता है।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में सहरसा उपजोन के पांचों जिला, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया तथा बेगूसराय की बैठक की शुरूआत दीप प्रज्वलित कर किया गया। बैठक में सभी जिला के जिला संयोजकों ने अपने- अपने जिला का वार्षिक कार्य की प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। तथा आगामी साल के लिए कार्य योजना बनाया गया। संगठन में ज्योति कलश यात्रा पर विस्तार से चर्चा की गई।

पुण्य व तप एक तरह से जीवन का ईंधन : डॉ अरुण

सहरसा. गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया. सत्र को संबोधित करते डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने क्वांटम कंप्यूटिंग व जीवन मूल्य के संबंध में कहा कि पहले हम जीवन को समझने की कोशिश करते हैं कि जीवन चलता कैसे है. उन्होंने कहा कि जीवन चलता है पुण्य, तप व ज्ञान से. उन्होंने कहा कि पुण्य सुख व सौभाग्य देता है व जीवन को संसार में प्रकाशित करता है. तप आंतरिक संपदा है बाहरी संपदा नहीं है. तप उर्जावान बनाये रखता है. आपकी इच्छा नहीं है तो आपका दुर्भाग्य आप तक फटक नहीं सकता है. तप का मतलब सिर्फ व्रत उपवास नहीं है. तप ज्यादा मानसिक होता है. फिर आप अनेक लोगों के जीवन में भी सौभाग्य की सृष्टि कर सकते हैं. तपस्या की चेतना से आपकी ग्रंथियां, चक्र, प्रकाशित रहते हैं. कोई नक्षत्र, किसी भी कीमत पर आपको बुरा फल नहीं देगा. दशाएं आती रहेगी, जाती रहेगी. पुण्य व तप एक तरह से जीवन का ईंधन है. पुण्य हेलीकॉप्टर है एवं तप हवाई जहाज. कार्यक्रम के दूसरे सत्र में उपजोन के पांचों जिला, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया व बेगूसराय की बैठक दीप प्रज्वलित कर की गयी. बैठक में सभी जिला के जिला संयोजक ने अपने-अपने जिला के साल भर के कार्य का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया एवं आगामी साल के लिए कार्य योजना बनायी. संगठन में ज्योति कलश यात्रा पर विस्तार से चर्चा की गयी.

संक्षिप्त समाचार

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र व ज्योति कलश यात्रा पर चर्चा आयोजित

मीडिया दर्शन। सहरसा। गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुई। व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डा अरुण कुमार जायसवाल ने क्वांटम कंप्यूटिंग और जीवन मूल्य के संबंध में कहा-पहले हम जीवन को समझने की कोशिश करते है-जीवन चलता है कैसे ?जीवन चलता है पुण्य,तप और ज्ञान से।उन्होंने कहा-पुण्य आप को सुख और सौभाग्य देता है,और आप के जीवन को संसार में प्रकाशित करता है।तप आंतरिक संपदा है,बाहरी संपदा नहीं है।तप आपको उर्जावान बनाए रखता है।अगर आपकी इच्छा नहीं है तो आपका दुर्भाग्य आपतक फटक नहीं सकता है। तप का मतलब सिर्फ व्रत उपवास नहीं है,तप ज्यादा मानसिक होता है, फिर तो आप अनेक लोगों के जीवन में भी सौभाग्य की सृष्टि कर सकते हैं। तपस्या की चेतना से आपकी ग्रंथियां, चक्र, प्रकाशित रहते हैं, तो कोई नक्षत्र, किसी भी कीमत पर आपको बुरा फल नहीं देगा।दशाएं आती रहेगी,जाती रहेगी।उन्होंने कहा अगर आप तप के साथ विवेक को संयुक्त कर चलते हैं तब पुण्य और तप एक तरह से आपके जीवन का ईंधन है।जैसे पुण्य हेलीकॉप्टर है और तप हवाई जहाज।क्वांटम कंप्यूटिंग संबंध में कहा-अमेरिका के अवंतिका ने कहा-नाइन्थ वान्डर आफ वर्ल्ड का एवोल्यूशन जर्नी क्वांटम कंप्यूटिंग है।कार्यक्रम के दूसरे सत्र में सहरसा क्षेत्र के पांचो जिला, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, तथा बेगूसराय का बैठक दीपप्रज्वलित कर किया गया।बैठक में सभी जिला के जिला संयोजक ने अपने अपने जिला के साल भरके कार्य की प्रतिवेदन प्रस्तुत किए तथा आगामी साल के लिए कार्य योजना बनाई गई। संगठन में ज्योति कलश यात्रा पर विस्तार से चर्चा की गई।

सूर्यभेदी प्राणायाम के लाभ

यह एक योगिक अभ्यास है., इसमें दाएं नथुने से सांस ली जाती है और बाएं नथुने से सांस छोड़ी जाती है। दायां नथुना सूर्य नाड़ी का मार्ग है। जिससे शरीर को ऊर्जा मिलती है। शरीर की क्रियाएं बेहतर तरीके से काम करती हैं। शरीर में विजातीय द्रव्यों का निष्कासन होता है। शरीर की शुद्धि होती है। कृमि रोगों से बचाव होता है। वात और कफ दोष से जुड़ी बीमारियां दूर होती हैं। खून साफ़ होता है और खून से जुड़ी बीमारियां दूर होती हैं। त्वचा की समस्याएं दूर होती हैं, झुर्रियां कम होती हैं और त्वचा की रंगत सुधरती है। पेट में कीड़े खत्म होते हैं। पाचन तंत्र बेहतर होता है। शरीर और दिमाग को आराम मिलता है। कुंडलिनी शक्ति जगाने में मदद मिलती है। तनाव का प्रबंधन होता है। डायबिटीज़ और ब्लड प्रेशर नियंत्रित रहता है। चयापचय में बढ़ोतरी होती है। मोटापे और हाइपोथायरायडिज्म में मदद मिलती है।

आगामी कार्यक्रम

- 2 अक्टूबर सामूहिक श्राद्ध तर्पण
- 3 अक्टूबर कलश स्थापना एवं नवरात्रि साधना हेतु सामूहिक संकल्प का कार्यक्रम
- 11 अक्टूबर पूर्णाहुति एवं अमृताशन प्रसाद वितरण
- 31 अक्टूबर दीपावली पर्व का आयोजन
- एवं प्रत्येक रविवार व्यक्तित्व परिष्कार परिष्कार सत्र की कक्षा का आयोजन

भाव पथ

दुर्गा शक्ति, दुर्गा भक्ति, दुर्गा रति, दुर्गा अनुरक्ति
दुर्गा कर्त्री, दुर्गा निर्मात्री, दुर्गा संहर्त्री, दुर्गा सिद्धिदात्री ।
दुर्गा भवानी, दुर्गा शिवानी, दुर्गा महेशानी, दुर्गा ब्रह्माणी
दुर्गा के विषय में क्या कहें, दुर्गा ही परम मंगलकरनी ।।

दुर्गा महारानी, दुर्गा पटरानी, दुर्गा ही सुख-दुःखकरिणी
दुर्गा परमेश्वरी, दुर्गा महेश्वरी, दुर्गा शिव संग अर्द्धनारीश्वरी ।
दुर्गा प्रकृति, दुर्गा पुरुष, दुर्गा ब्रह्म, दुर्गा परब्रह्म
दुर्गा धारिणी हैं धरती की, दुर्गा ही जन्म-मृत्युकरणी ।।

दुर्गा आदि हैं, दुर्गा ही अन्त हैं, दुर्गा युग-युगान्तर लातीं
हर कल्प-कल्पान्तर में आकर वे, नवरूप धरतीं नव विश्व बनातीं ।
दुर्गा आत्मा, दुर्गा परमात्मा, दुर्गा ही हम सब में जीवात्मा
कर्मों के अनुसार जो फल देतीं, वे ही तो दुर्गा कहलातीं ।।

दुर्गा सती, दुर्गा पार्वती, दुर्गा सीता, दुर्गा राधा
दुर्गा सरस्वती, दुर्गा लक्ष्मी, दुर्गा काली, दुर्गा महाकाली ।
दुर्गा प्रकृति, दुर्गा पुरुष हैं, दुर्गा ही हैं पराप्रकृति
दुर्गा ही हैं जगज्जननी, दुर्गा ही हैं इच्छाशक्ति ।।

दुर्गा बुद्धि, दुर्गा विवेक हैं, दुर्गा ही मनुज का हिम्मत, साहस
दुर्गा करुणा, दुर्गा ममता, दुर्गा ही हैं दया और क्षमा ।
दुर्गा ध्यान हैं, दुर्गा ध्येय हैं, दुर्गा ही हैं हम सबका ध्याता
दुर्गा ज्ञान हैं, दुर्गा ज्ञेय हैं, दुर्गा ही हम सबका ज्ञाता ।।

दुर्गा के विषय में हम क्या कहें, हम अकिंचन, हम मूढ हैं
पर दुर्गा हम सबकी प्यारी माता, माता की गोद में ही हम हैं ।
भक्ति उनकी कर लें हम सब, उन्हें प्रसन्न कर लें हम सब
वे उतरें पुनः इस भू पर, यही प्रार्थना कर लें हम सब ।।

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है– मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे– यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	:	गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)
संपर्क सूत्र	:	06478-228787, 9470454241
Email	:	gspsaharsa@gmail.com
Website	:	https://gsps.co.in/
Social Connect	:	https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA
		https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39
		https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en
		https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en
		https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/